लेखन शिक्षण / लिखना सिखाना (Teaching of Writing)

भाषा के मुख्यतः दो रूप हैं —

- ध्वन्यात्मक
- वर्णात्मक (वर्णात्मक के भी दो रूप)
  - मौखिक
  - लिखित

भाषा ध्वनियों को ध्वनि चिन्हों (लिपि) के माध्यम से जब स्थायित्व प्रदान करते हैं तो इसे भाषा का लिखित पक्ष अर्थात् लेखन कहते हैं। जब हम अपनी भावनाओं, अनुभूतियों, अपने विचारों या उपलब्धियों को लिपिबद्ध करते हैं तो उसे ही लेखन कहते हैं। किसी भाषा की लिपि का सम्बन्ध उस भाषा की ध्वनियों के लिए प्रयुक्त चिन्हों (ध्वनि-चिन्हों) से होता है।

लेखन शिक्षण के उद्देश्य

1. छात्रों में लेखन के प्रति अभिरुचि बढ़ाना।
2. छात्रों को सुंदर, स्पष्ट, शुद्ध एवं आकर्षक लेखन की प्रेरणा देना।
3. शब्द भंडार में वृद्धि करना।
4. वर्तनी के शुद्ध/सही रूप की शिक्षा देना।
5. आवश्यकतानुसार मात्रा, विराम आदि चिन्हों के समुचित उपयोग का अभ्यास कराना।
6. लेखन गति को तेज/प्रवाहपूर्ण बनाना एवं लेखन शैली का विकास करना।
7. सरल, परिमार्जित, परिष्कृत भाषा के उपयोग में कुशल बनाना।
8. कल्पना, तर्क, निरीक्षण और निर्णय शक्ति का विकास करना।
9. भावाभिव्यक्ति की कुशलता (लेखन द्वारा) विकसित करना।
10. लेखन में स्वावलम्बी बनाना।

लेखन शिक्षण की विधियाँ

1. **रूपरेखा अनुकरण विधि** — जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इसमें छात्रों के सम्मुख अक्षरों और आगे चलकर शब्दों की एक रूपरेखा बिन्दुओं (•) के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। छात्रों को इन बिन्दुओं को क्रमवार मिलाने का निर्देश देते हैं। जैसे — 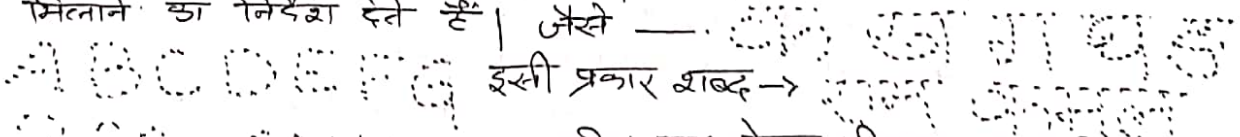 इसी प्रकार शब्द → 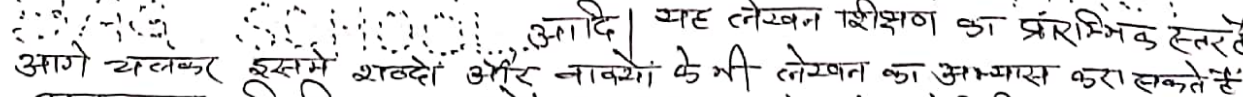 आदि। यह लेखन शिक्षण का प्रारम्भिक स्तर है। आगे चलकर इसमें शब्दों और वाक्यों के भी लेखन का अभ्यास करा सकते हैं।
2. **अनुकरण विधि** — इसमें अध्यापक छात्रों को कोई लिखित/मुद्रित अंश दे देता है। प्रदत्त शब्द, वाक्यांश, यदि कोई आकृति है तो ~~शब्द और~~ आकृति के अनुरूप शब्द को पहचानने और उसे लिखने का निर्देश छात्रों को देता है। इससे अक्षर → शब्द → वाक्यों को सुन्दर व शुद्ध लेखन का अभ्यास कराने का प्रयास किया जाता है।

Scanned by CamScanner

3. **माण्टेसरी विधि** — जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह विधि माण्टेसरी द्वारा अपनायी गयी। लिखना सिखाने की यह मनोवैज्ञानिक विधि मानी जाती है। हम प्रायः देखते हैं कि घर में छोटे बच्चे के हाथ में जब भी कोई कलम, पेन्सिल आती है वह उससे गोला, तिरछी, सीधी घुमावदार लकीरें खींचने लगते हैं। उनकी इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए पहले विभिन्न प्रकार की रेखाएं और फिर उन रेखाओं के माध्यम से अक्षर लेखन प्रारम्भ करना चाहिए। जैसे—

- पहले सीधी लकीरें — — —